इकाई 7 सामाजिक विज्ञानों की भाषा (इतिहास के संदर्भ में) तथा वर्तनी के कुछ नियम

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 पृष्ठभूमि

- 7.2.1 ईस्ट इंडिया कंपनी
- 7.2.2 अंतिम मुगल बादशाह
- 7.2.3 राजनीति पर अंग्रेज़ों का अधिकार एवं शोषण नीति
- 7.2.4 1857 की क्रांति
- 7.2.5 सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय जागरण

7.3 कांग्रेस की स्थापना

7.4 गांधी जी का आगमन

- 7.4.1 क्रांतिकारी देशभक्त
- 7.4.2 साइमन कमीशन
- 7.4.3 चुनाव
- 7.4.4 अंतर्राष्ट्रीय घटनाएँ

7.5 भारत छोड़ो आंदोलन

- 7.5.1 नेताजी की आज़ाद हिंद फौज
- 7.5.2 स्वतंत्रता प्राप्ति

7.6 वर्तनी संबंधी कुछ नियम

- 7.6.1 प्रत्ययों से शब्द-रचना
- 7.6.2 वर्तनी के दो रूप
- 7.6.3 पाठ में प्रयुक्त कुछ शब्दों की वर्तनी की विशेषताएँ

7.7 शब्दावली

7.8 सारांश

7.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इतिहास विषय से संबंधित यह इकाई भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर प्रकाश डालती है। इसका प्रमुख उद्देश्य आपको इतिहास विषयक लेखन से परिचित कराना है। इसमें प्रत्ययों द्वारा शब्द-रचना तथा वर्तनी के दो रूपों की भी चर्चा की गई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- स्वतंत्रता संग्राम के महत्व को जानेंगे;
- स्वतंत्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास बता सकेंगे;

- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान घटी प्रमुख घटनाओं के कारणों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- सामाजिक विज्ञानों, विशेषकर इतिहास के किसी प्रकरण को पढ़कर उसका स्तर समझ सकेंगे;
- इकाई में आये पारिभाषिक शब्दों का अर्थ कर सकेंगे;
- प्रत्ययों द्वारा शब्द-रचना विशेषकर पारिभाषिक शब्दों की रचना को पहचान कर उनका सही प्रयोग कर सकेंगे; और
- वर्तनी के दो रूपों से परिचित होंगे और वर्तनी का सही प्रयोग कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

हिंदी के आधार पाठ्यक्रम के अंतर्गत हमारी यह सातवीं इकाई है। आपने पहले खंड में विभिन्न विषयों के माध्यम से हिंदी भाषा की जानकारी प्राप्त की है। इस इकाई में आप देखेंगे कि इतिहास की घटनाओं का वर्णन करते समय भाषा क्या रूप ग्रहण करती है। इसमें आप यह भी देखेंगे कि काफी पहले से भारत का विदेशों से व्यापारिक संबंध था। धीरे-धीरे विदेशी यहाँ की राजनीति में प्रवेश पाते गए और एक दिन यहाँ के शासक बन बैठे। भारतीयों में नवजागरण की लहर उठी, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन का सूत्रपात हुआ। धीरे-धीरे इस आंदोलन का विस्तार होता गया, नये-नये नेता आये और अंततः विदेशी दासता के चंगुल से यह देश मुक्त हुआ।

7.2 पृष्ठभूमि

1. प्राचीन काल से ही भारत एवं यूरोप में व्यापारिक संपर्क रहा है। सर्वप्रथम भारत से व्यापार के लिए यूनानवासी समुद्र एवं स्थल मार्ग से आते-जाते थे। व्यापारिक मार्ग का एशियाई क्षेत्र अरब सौदागरों के अधिकार में था। सन् 1453 में कुस्तुनतुनिया पर तुर्कीवालों का अधिकार हो गया और इस कारण यूरोपवासियों का व्यापारिक रास्ता बंद हो गया। यूरोपीय देशों में भारत एवं पूर्वी देशों के मसाले आदि की ज़ोरदार माँग थी और इन वस्तुओं के व्यापार में यूरोपीय सौदागर अत्यधिक मुनाफ़ा कमाते थे। इस कारण व्यापार के लिए कोई दूसरा मार्ग खोजा जाने लगा। उस समय यूरोप के कई देशों में नौपरिवहन के क्षेत्र में उन्नति हो रही थी। इन देशों में स्पेन एवं पुर्तगाल सबसे आगे थे। साहस और उत्साह से समुद्री यात्रा द्वारा नयी जगह के बारे में पता लगाने की उनमें उत्कंठा थी। इसी के परिणामस्वरूप पुर्तगाल निवासी वास्कोडिगामा ने सन् 1498 में भारत तक का नया समुद्री मार्ग खोज निकाला। भारत के धन-वैभव की प्रसिद्धि तो थी ही। अतः पुर्तगालवासियों ने व्यापार के लिये कोचीन, गोआ, दीव, दमन में व्यापारिक बस्तियाँ बनायीं। भारत के साथ व्यापार में पुर्तगालियों ने काफ़ी लाभ कमाया। यूरोप के अन्य देश भी भारत एवं पूर्वी देशों से व्यापार के लिए प्रयत्नशील थे। डच, फ्रांसीसी एवं अंग्रेज़ों में व्यापारिक एकाधिकार के लिए संघर्ष हुए। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अंग्रेज़ी नौ सेना अन्य यूरोपीय **प्रतिद्वन्द्वियों** से आगे निकल गयी थी। इसी कारण व्यापारिक एकाधिकार के संघर्ष में अंग्रेज़ों को सफलता मिली।

7.2.1 ईस्ट इण्डिया कम्पनी

2. 1599 ई. में इंग्लैंड में सौदागरों के 'मर्चेंट एडवेंचर्स' नामक एक समूह के नेतृत्व में एक अंग्रेज़ी संस्था या कंपनी की स्थापना हुई। भारत एवं पूर्वी देशों के साथ व्यापार के लिये बनी यह संस्था 'ईस्ट इण्डिया कंपनी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। 1600 ई. में रानी एलिज़ाबेथ ने इस कंपनी को एक **सनद** एवं पूरब के साथ व्यापार के लिए विशेषाधिकार दिया। आरंभ से ही यह कंपनी इंग्लैंड के राजतंत्र से संबंधित थी। इस कंपनी में रानी एलिज़ाबेथ (1558-1603)

की भी हिस्सेदारी थी। भारत में सर्वप्रथम सूरत में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने अपना व्यापारिक केंद्र स्थापित किया। उस समय दिल्ली की गद्दी पर मुगल सम्राट जहाँगीर का शासन था। मुगल बादशाहों से अनुनय-विनय कर अंग्रेज़ों ने अपना व्यापारिक केन्द्र बनाना आरंभ किया था। पुर्तगाली नौ सेना को अंग्रेज़ों ने हराया, इसलिए मुगल बादशाह ने सोचा कि अंग्रेज़ी नौ सेना द्वारा पुर्तगालियों की नौसैनिक शक्ति समाप्त की जा सकती है। अतः भारत के पश्चिमी तट पर कई स्थानों पर अंग्रेज़ो को अपना कारखाना खोलने की अनुमति दे दी गयी। ये कारखाने किलाबंद होते थे जिनमें गोदाम, दफ्तर और कंपनी के कर्मचारियों के रहने के मकान होते थे। इन कारखानों में कोई माल तैयार नहीं होता था। अंग्रेज़ इतने से संतुष्ट नहीं थे। उनका मुख्य उद्देश्य था अधिक से अधिक धन कमाना। इस कार्य के लिए उन्होंने लाल सागर तथा मक्का जाने वाले व्यापारिक जहाज़ों को रोक लिया तथा मुगल अधिकारियों पर दबाव डाल कर एक महत्वपूर्ण सनद पा ली। इस सनद के द्वारा वे मुगल साम्राज्य के सभी हिस्सों में व्यापारिक कारखाना बनाने के अधिकारी हो गए। सूरत की अपेक्षा दक्षिण के मछलीपट्टनम में 1611 में उन्होंने एक कारखाना खोला। फिर उसे वहाँ से भी हटाकर सुदूर मद्रास में ले गए। सुदूर दक्षिण में अपना कारखाना ले जाने के पीछे कारण यह था कि मुगल बादशाह का प्रभाव वहाँ कम था। दिल्ली से इतनी दूरी की वजह से मुगलों के हस्तक्षेप में थोड़ी कमी आई। आरंभ से जहाँ अंग्रेज़ों ने कारखाने लगाये उस ईलाके पर अपना अधिकार कायम करने की कोशिश की। 1639 में मद्रास के स्थानीय राजा द्वारा दिया गया अधिकार अंग्रेज़ों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। तट-क्षेत्र की छह मील लंबी पट्टी पर प्रशासन करने तथा बन्दरगाह के सीमा शुल्क की आधी रकम राजा को देने पर उन्हें सिक्का ढालने की अनुमति भी दी गयी।

3. धीरे-धीरे भारत के अन्य महत्वपूर्ण स्थानों में भी अंग्रेज़ व्यापारिक केंद्र बनाने लगे। बंबई के बाद 1633 में पूर्वी भारत में पहला कारखाना उड़ीसा में खोला गया। फिर 1651 में बंगाल के हुगली में तथा मुगल बादशाह से अधिकार प्राप्त कर पटना, बालासोर तथा ढाका में इसी प्रकार के कारखाने स्थापित किये गए। अंग्रेज़ शक्तिशाली मुगल साम्राज्य की शक्ति को पहचानते थे। अतः आरंभ से ही उन्होंने बादशाह से काम लेने के लिए अनुनय-विनय और प्रलोभन का सहारा लिया। उनकी यह नीति औरंगज़ेब के शासनकाल तक बनी रही।

7.2.2 अंतिम मुगल बादशाह

4. 1707 में मुगल बादशाह औरंगज़ेब की मृत्यु हो गई। गद्दी के लिए औरंगज़ेब के बेटों में संघर्ष प्रारंभ हो गया। बहादुरशाह विजयी हुआ। फिर बहादुरशाह की मृत्यु के बाद सत्ता के लिए संघर्ष हुआ। एक शक्तिशाली केंद्र के अभाव में मुगल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। सत्ता-संघर्ष में शक्तिशाली सामंत शहज़ादों को कठपुतली की तरह इस्तेमाल करते थे। मुगल सत्ता के सीमित होते ही महत्वाकांक्षी सामंतों ने स्वतंत्र राज्य कायम कर लिए। कुछ शक्तियाँ **बग़ावत** द्वारा खड़ी हुईं। बंगाल, अवध, हैदराबाद, मैसूर के स्वतंत्र राज्य इसी प्रकार बने।

5. 1738-39 में नादिरशाह ने मुगल सेना को हराया और शाही खज़ाना लूटा। फिर अहमदशाह अब्दाली ने भी मुगल सेना को हराया। इन सब कारणों से मुगल साम्राज्य की छिपी कमज़ोरी सामने आ गयी। अंग्रेज़ों ने भारत की इस राजनीतिक स्थिति से लाभ उठाना शुरू किया। अपने व्यापार को बेरोकटोक चलाने के लिए वे राजनीतिक सत्ता को अपने हाथ में लेना चाहते थे। 1686 में अंग्रेज़ों ने हुगली के क्षेत्र में लूटपाट मचायी। परिणामस्वरूप मुगल सेना से संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में अंग्रेज़ों को मुगल सेना ने काफ़ी नुकसान पहुँचाया। हुगली आदि व्यापारिक केंद्र नष्ट कर दिये गये और अंग्रेज़ों को भागकर एक दुर्गम टापू पर शरण लेनी पड़ी। इस घटना के बाद अंग्रेज़ों ने मुगल बादशाह से क्षमा याचना की। मुगल बादशाह ने अंग्रेज़ों को शक्तिहीन समझ कर उन्हें फिर व्यापारिक कारखाने स्थापित करने की अनुमति दे दी। 1698 में हुगली क्षेत्र में अंग्रेज़ों ने तीन गाँवों सतानती, कालिंकात्ता और गोविन्दपुर की ज़मींदारी हासिल की। इन्हीं गाँवों की व्यापारिक उन्नति के फलस्वरूप

उन्नति के कारण तीन स्थानों-मद्रास, बंबई एवं कलकत्ता का बड़े शहरों के रूप में विकास हुआ। समुद्री किनारे पर व्यापारिक केंद्र होने से अंग्रेज़ों को एक और लाभ था-भारतीय शक्तियों से संघर्ष के समय वे समुद्री राह से शहर छोड़कर अपना बचाव कर सकते थे।

6. भारत से व्यापार करके अंग्रेज़ों ने काफी धन कमाया। इंग्लैंड के राजा से एक सनद प्राप्त करने के लिए उन्होंने धन का घूस के रूप में प्रयोग किया। इस सनद के द्वारा उन्हें कई अधिकार प्राप्त हुए, जिनमें किला बनाना, सेना रखना, पूर्वी शक्तियों के साथ युद्ध तथा संधि का स्वयं निर्णय तथा व्यापारिक केंद्र की बस्तियों में रह रहे अंग्रेज़ों की न्यायिक व्यवस्था की स्थापना के अधिकार शामिल थे। अंग्रेज़ों ने आगे चलकर इन अधिकारों का प्रयोग अपने राज्य की स्थापना एवं विस्तार में किया।

7. बंगाल का उपजाऊ इलाका इस क्षेत्र की समृद्धि में सहायक था। इसी कारण व्यापार की दृष्टि से अंग्रेज़ों ने इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को चुना। कंपनी को मुगल बादशाह से 1717 में एक शाही फ़रमान मिला, जिसके द्वारा वे बिना टैक्स दिये माल का आयात-निर्यात कर सकते थे। बंगाल के नवाबों से इसी फ़रमान के कारण अंग्रेज़ों का संघर्ष प्रारंभ हुआ। 1757 में प्लासी के मैदान में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के साथ अंग्रेज़ी सेना का संघर्ष हुआ। इस युद्ध में नवाब की हार हुई और अंग्रेज़ी राज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

7.2.3 राजनीति पर अंग्रेज़ों का अधिकार एवं शोषण नीति

8. शक्तिशाली केंद्रीय मुगल सल्तनत के अभाव में छोटे-छोटे राज्यों का उदय हो चुका था। अपनी शक्ति एवं प्रभाव को बढ़ाने के लिए इन राज्यों में युद्ध हुआ करते थे। अंग्रेज़ भारत की इस राजनीतिक स्थिति से अवगत हो गये थे। व्यापारिक उन्नति के लिए उन्होंने राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना शुरू कर दिया था। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने संधि एवं धोखा-धड़ी की नीति भी अपनायी। भारतीय राजाओं को यह विश्वास था कि अंग्रेज़ों की सहायता से वे अपने प्रतिद्वन्द्वियों को परास्त कर सकेंगे। किंतु यह उनकी भूल थी। यदि अंग्रेज़ किसी युद्ध में किसी शासक का साथ देते तो विजय मिलने पर अपनी बात मनवाने के लिए उन्हें बाध्य करते थे। विजयी राज्यों को अंग्रेज़ी सेना रखनी पड़ती थी तथा उसका खर्च भी उन्हें ही वहन करना पड़ता था। इस प्रकार जिन राजाओं ने अंग्रेज़ों की इस शर्त पर सहायता ली उन्होंने एक प्रकार से अपनी स्वतंत्रता गँवा दी। अंग्रेज़ों ने संधि द्वारा मराठा शक्ति को अपने वश में किया तो धोखा-धड़ी से मैसूर राज्य को अपने अधिकार में ले लिया। इस प्रकार एक के बाद एक भारतीय राज्यों पर अंग्रेज़ों का अधिकार होता गया। 1857 तक लगभग सारा भारत अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया था।

9. अंग्रेज़ों का मुख्य उद्देश्य था व्यापार द्वारा धन कमाना। यहाँ की राजनीतिक स्थिति ने उन्हें इस क्षेत्र में प्रवेश करने का मौका दिया था। लेकिन राजनीतिक अधिकार का प्रयोग भी उन्होंने भारत से धन कमाने के लिए ही किया। भारत का उद्योग विकसित था। यहाँ का सूती वस्त्र यूरोप के देशों में निर्यात होता था। अन्य सामानों में मसाला, हीरे.जवाहरात, रेशमी वस्त्र, नील, गेहूँ, चीनी, काली मिर्च आदि का निर्यात होता था। अंग्रेज़ यहाँ के माल को अत्यधिक मुनाफे में अपने देश में बेचते थे। इस प्रकार भारत के उद्योग पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ा। लेकिन यह स्थिति इंग्लैंड में हुई औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप परिवर्तित हो गयी। नये आधुनिक उपकरणों के आविष्कार द्वारा वहाँ उत्पादन में वृद्धि हुई। उत्पादन के लिए कच्चा माल भारत से जाने लगा तथा तैयार माल की भारत के बाज़ार में खपत होने लगी। व्यापार की इस स्थिति के कारण भारत की औद्योगिक व्यवस्था में परिवर्तन होने लगा। भारत के लोगों का आर्थिक शोषण आरंभ हो गया। यहाँ के उत्पादित माल पर अधिक कर लगा दिये गये। भारत का कुटीर उद्योग ठप्प होने लगा। बुनकर एवं कारीगर बेकार होने लगे। भारतीय कुटीर उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुएँ ब्रिटिश मिलों में उत्पादित वस्तुओं से काफी महंगी होने लगीं। इसका कारण यह था कि यहाँ उत्पादन के पुराने तरीकों का ही इस्तेमाल होता था जबकि इंग्लैंड में आधुनिक मशीनों द्वारा उत्पादन होने लगा था। मशीन में कम समय में उत्पादन की मात्रा अधिक होती थी। जबकि भारत में दस्तकारी एवं अन्य

मात्रा भी क़म होती थी। दूसरी ओर उनके उत्पादन पर कर भी बढ़ा दिया गया था। इन सब कारणों से कारीगरों को अपने उद्योग बंद करने पड़े। उनकी आर्थिक स्थिति खराब होने लगी। जीवन-यापन के लिए उन्होंने दूसरा तरीका खोजना शुरू किया। अंग्रेज़ों द्वारा भारत पर राजनीतिक अधिकार प्राप्त कर लेने पर सबसे अधिक शोषण किसानों का हुआ। ज़मीन का स्वामित्व उनके हाथ से निकल गया। अंग्रेज़ों की **भूराजस्व** उगाही व्यवस्था ने किसानों की स्थिति दयनीय बना दी। लगान की सीमा इतनी बढ़ा दी गयी कि किसान के लिए उसे भर पाना कठिन हो गया। कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए किसी प्रकार की सुविधा नहीं प्रदान की गयी। अंग्रेज़ों ने एक नये महाजन वर्ग को जन्म दिया, जिसके द्वारा किसानों का आर्थिक शोषण होता था। महाजन किसान को कर्ज़ देता था किंतु समय पर उसकी अदायगी न कर सकने पर किसान सूद देते-देते बर्बाद हो जाता था। इससे उसकी आर्थिक दशा खराब होती गयी। इस प्रकार किसानों, मज़दूरों और कारीगरों में अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ़ असंतोष जमा होने लगा।

10. कंपनी के शासन में भारतीय सैनिकों की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी। अंग्रेज़ी सैनिकों की तुलना में उन्हें बहुत कम वेतन मिलता था। उनकी पदोन्नति की कोई व्यवस्था नहीं थी। इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था के प्रति उनमें असंतोष जमा होने लगा। भारतीय उच्च एवं मध्य वर्ग के लोगों में असंतोष इस कारण फैला कि उन्हें नौकरियों में उच्च पदों पर नहीं रखा जाता था। इन सब कारणों से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध असंतोष बढ़ने लगा। यह असंतोष 1857 की क्रांति के रूप में फूट पड़ा।

7.2.4 1857 की क्रांति

11. 1857 की क्रांति से पूर्व कई ऐसी घटनाएँ घटीं, जिससे यह ज़ाहिर हो चुका था कि अंग्रेज़ी फ़ौज को हराया जा सकता है। 1838 एवं 1842 में अफ़ग़ानों ने अंग्रेज़ी सेना को हराया। 1815 एवं 49 में पंजाब युद्ध में उनकी पराजय हुई। 1857 के पहले 1854-56 के क्रीमिया युद्ध में भी अंग्रेज़ी सेना की हार हुई। बंगाल एवं बिहार के संथाल आदिवासियों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध बगावत कर दी। इन्होंने अंग्रेज़ी शासन को अपने क्षेत्र से अस्थायी तौर पर समाप्त कर दिया था। 1820 से 1837 में कोलों द्वारा, 1855-56 में संथालों द्वारा किया गया विद्रोह भी ऐसा ही विद्रोह था, जिनसे अंग्रेज़ी सेना की अपराजेयता पर प्रश्न-चिह्न लग गया था।

12. गदर में सिपाही विद्रोह का प्रमुख कारण यह अफवाह बनी कि जिस कारतूस का प्रयोग सिपाही करते थे उस पर गोमांस एवं सूअर की चर्बी लगी हुई थी। कारतूस के ढक्कन को दाँत से तोड़ना पड़ता था। इस कारण हिंदू एवं मुसलमान दोनों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची थी। इसके अलावा एक महत्वपूर्ण कारण था सामंतों द्वारा अपने अधिकार को दुबारा पाने की इच्छा। राजाओं, सामंतों एवं जागीरदारों के अधिकार छीन लिए गए थे। अतः उन्होंने क्रांति के द्वारा उसे दुबारा पाने का प्रयत्न किया। सामंती शक्तियों द्वारा फिर से अधिकार पाने का यह अंतिम प्रयास था।

13. गदर की शुरुआत मेरठ से हुई। मुगल बादशाह बहादुरशाह को सैनिकों ने अपना नेता घोषित कर दिया। नाना साहेब, तात्याँ टोपे, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बिहार के ज़मींदार कुँअर सिंह, दिल्ली के बख्त खाँ, बरेली के बहादुर खाँ एवं फैज़ाबाद के मौलवी अहमदुल्लाह खाँ ने अंग्रेज़ी सत्ता को समाप्त करने के लिए अंतिम साँस तक संघर्ष किया। लेकिन यह विद्रोह मात्र सामंती सत्ता की वापसी का ही विद्रोह नहीं था। हिन्दू-मुसलमान, किसान, मज़दूर और आम जनता ने इसमें खुलकर भागीदारी कर इसे प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन का स्वरूप प्रदान किया। यह बात दूसरी है कि अंग्रेज़ी सत्ता ने इस विद्रोह को सख्ती से कुचल दिया।

14. 1857 के विद्रोह को दबाने के बाद अंग्रेज़ों ने प्रशासन को मज़बूत करने के लिए कई कदम उठाए। संचार माध्यम को व्यवस्थित करने के लिए रेल एवं सड़क व्यवस्था बढ़ाई गई। इंग्लैंड की संसद के एक एक्ट द्वारा शासन करने का अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ से ब्रिटिश सरकार के हाथ में आ गया। भारत की राजनीति में दखल देकर ईस्ट इंडिया

कंपनी आर्थिक लाभ उठाना चाहती थी। लेकिन धीरे.धीरे समाज के प्रबल वर्ग के हितों की दृष्टि से शासन होने लगा। 1870 में लंदन और भारत के बीच समुद्री तार की व्यवस्था हो जाने से भारत पर लंदन से शासन करने में अंग्रेज़ों को सुविधा हो गई। पहले कंपनी के निदेशकों और बोर्ड ऑफ कंट्रोल द्वारा भारत पर शासन होता था। अब वह अधिकार भारत मंत्री को प्राप्त हो गया। भारत मंत्री ब्रिटिश मंत्रिमंडल का सदस्य होता था। उसकी सहायता के लिए एक परिषद् थी। इस परिषद् में कुछ भारतीय सदस्यों को रखा गया। इस परिषद् के भारतीय सदस्य संख्या में थोड़े एवं गवर्नर जनरल द्वारा मनोनीत किये जाते थे। गवर्नर जनरल राजाओं, उनके मंत्रियों एवं बड़े ज़मींदारों, बड़े सौदागरों को नामजद करता था, जो वास्तव में भारतीय जनता के प्रतिनिधि नहीं थे। 1857 के विद्रोह से शिक्षा ग्रहण कर ब्रिटिश शासकों ने अपनी नीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। उन्होंने भारतीय राजाओं, सामंतों को अपना मित्र बनाया और उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की। इस प्रलोभन के कारण वे अंत तक ब्रिटिश शासन के सहयोगी बने रहे।

15. शासन के पुनर्गठन के लिए कंपनी की सेना को ब्रिटिश सेना के साथ मिला दिया गया। किसी भी भारतीय को सेना के उच्च पद पर नहीं रखा गया। 1857 के विद्रोह में भाग लेने वाले अधिकांश सिपाहियों को सेना में नहीं रखा गया। इसके विपरीत जिन सिपाहियों ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेज़ों की सहायता की थी उन्हीं को सेना में भर्ती किया गया। जाति, धर्म के आधार पर सेना का संतुलन इस प्रकार किया गया कि भारतीय सिपाही एकजुट होकर विद्रोह न कर पाएँ। 1857 के विद्रोह में हिंदू, मुसलमान सभी एकजुट होकर अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़े थे। इस कारण अंग्रेज़ों ने इस एकता को तोड़ने के लिए उनमें 'फूट डालो और शासन करो' की नीति का पालन किया। विद्रोह के बाद मुसलमान जागीरदारों की संपत्ति छीन ली गयी तथा उन्हें सताया गया। किंतु 1870 के बाद उनकी इस नीति में परिवर्तन आया। उच्चवर्गीय तथा मध्यवर्गीय मुसलमानों को अपने विश्वास में लेने के लिए ब्रिटिश शासकों द्वारा ज़ोरदार प्रयास किया गया।

7.2.5 सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय जागरण

16. अंग्रेज़ों द्वारा आरंभ की गयी शिक्षा नीति का जो उद्देश्य था, उसका परिणाम कुछ और ही निकला। राजा राममोहन राय जैसे प्रबुद्ध भारतीयों ने पाश्चात्य शिक्षा का समर्थन किया। पश्चिम में जो वैज्ञानिक उन्नति हुई थी, उसके कारण यूरोप के जन-जीवन में जो परिवर्तन हो रहे थे, उससे कुछ प्रबुद्ध भारतीय प्रभावित थे। इस प्रकार अपने देश एवं समाज की दयनीय अवस्था पर भारतीयों को सोचने पर मजबूर होना पड़ा। कुछ प्रबुद्ध शिक्षित भारतीयों ने ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति को पहचाना। भारतीय संस्कृति और सभ्यता कितनी उच्चकोटि की थी, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भारतवासियों ने कितनी प्रगति की थी, इन सब बातों का विश्लेषण करने पर उन्होंने पाया कि भारत की वर्तमान दुर्दशा के लिए विदेशी शासन ज़िम्मेदार हैं। इस दशा में सुधार के लिए प्रशासन में उनकी भागीदारी आवश्यक है। इन्हीं कारणों से भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना पनपने लगी। फलस्वरूप भारतीय जनता के हितों का ब्रिटिश हितों से संघर्ष शुरू हुआ।

17. भारतीय जनता में राष्ट्रीयता की भावना के पनपने एवं फैलने के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि राजनीतिक दृष्टि से संपूर्ण भारत एक देश के रूप में सूत्रबद्ध हो रहा था। अंग्रेज़ी राज्य का आधिपत्य संपूर्ण भारत पर था। सड़क, रेलवे, टेलीग्राफ, डाक व्यवस्था के समुचित प्रसार से देश के विभिन्न हिस्से एक-दूसरे से जुड़ गये थे। अतः भारतीय जनता ने पाया कि उनका शोषण करने वाला सबसे बड़ा ब्रिटिश शासन है, जिसे उखाड़ फेंकने के लिए एकता के सूत्र में बंधना ज़रूरी है।

18. अंग्रेज़ों के आने से पूर्व भी इस देश में ईसाई धर्म प्रचारक आ चुके थे, किंतु जब अंग्रेज़ इस देश की राजनीति पर छा गये, तो ईसाई धर्म प्रचारकों के कार्य में तेज़ी आ गयी। 1857 के बाद उनकी गतिविधियाँ और तेज़ हो गईं। सीरामपुर एवं पटना में ईसाई मिशनरियों ने प्रेस के द्वारा धर्म प्रचार की छोटी-छोटी पुस्तकें एवं बाइबिल का हिन्दी अनुवाद छाप कर लोगों में बाँटना शुरू किया। ईसाई धर्म के प्रभाव के बढ़ने की आशंका और भारतीय समाज

में व्याप्त सामाजिक और धार्मिक पिछड़ेपन ने समाज सुधार के आंदोलन की शुरुआत की। इन समाज सुधार आंदोलनों एवं आधुनिक मूल्यों से प्रेरित साहित्यिक रचनाओं के द्वारा राष्ट्रीयता की भावना को फैलाने में मदद मिली। राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज द्वारा, दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज द्वारा, रानाडे ने प्रार्थना समाज तथा सर सैयद अहमद ने मुस्लिम समाज में समाज सुधार आंदोलन को गति प्रदान की। बंगाल के बंकिमचंद्र चटर्जी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर, असम के लक्ष्मीनाथ बैज बरुआ, मराठी के विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, तमिल के सुब्रह्मण्यम भारती एवं हिंदी के भारतेन्दु हरिश्चंद्र तथा उर्दू के अल्ताफ़ हुसैन हाली की रचनाओं द्वारा राष्ट्रीयता और समाज सुधार की भावना को बहुत बल मिला।

19. उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में बड़ी संख्या में समाचार पत्रों के द्वारा राष्ट्रीयता की भावना का विस्तार हुआ। हिंदू, पैट्रियट, अमृत बाज़ार पत्रिका, इंडियन मिरर, बंगाली, मराठा केसरी, स्वदेशी मन्त्र, आंध्र प्रकाशिका, केरल पत्रिका, हिन्दुस्तानी, ट्रिब्यून, कोहिनूर आदि पत्रों के माध्यम से राष्ट्रवादी विचारधारा का विकास संपूर्ण देश में हुआ।

बोध प्रश्न

1) डच, फ्रांसीसी आदि से व्यापारिक एकाधिकार के लिए हुए संघर्ष में अंग्रेज़ों ने इस कारण सफलता हासिल की कि (पैरा 1)

   i) अंग्रेज़ों के पास सैनिकों की संख्या अधिक थी।

   ii) अन्य यूरोपीय प्रतिद्वन्द्वी साहसी नहीं थे।

   iii) अन्य यूरोपीय प्रतिद्वन्द्वियों के पास नौसेना की कमी थी।

   iv) औद्योगिक क्रांति के द्वारा अंग्रेज़ी नौसेना मज़बूत बन गयी थी। [ ]

2. शक्तिशाली मुगल शासकों के प्रभाव से बचे रहने के लिए अंग्रेज़ों ने दक्षिण भारत के किन दो स्थानों में व्यापारिक कारखानों की स्थापना की। (पैरा 2)

   i) ..... ii) .....

3. अंग्रेज़ भारत में राजनीतिक अधिकार चाहते थे जिससे कि (पैरा 5)

   i) वे भारतीयों पर शासन कर सकें।

   ii) वे भारतीयों को सभ्य बना सकें।

   iii) भारतीयों को ईसाई बना सकें।

   iv) वे अपने व्यापार को बेरोकटोक चला सकें। [ ]

4. 1857 का विद्रोह (पैरा 12)

   i) सामंतवादी प्रवृत्तियों द्वारा फिर से सत्ता हासिल करने के उद्देश्य से हुआ।

   ii) केवल किसानों ने अपनी माँग के लिए किया।

   iii) केवल सिपाहियों द्वारा किया गया।

   iv) केवल मज़दूरों द्वारा किया गया। [ ]

5. अंग्रेज़ों द्वारा भारत की राजनीति पर अधिकार जमाने का मुख्य कारण था एक शक्तिशाली केंद्र का अभाव। आप और दो कारण बताएँ। (पैरा 8)

i) .....

ii) .....

6. 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेज़ों ने शासन पर नियंत्रण के उद्देश्य से कई उपाय किए। आप चार उपायों को लिखिए। (पैरा 17)

i) .....

ii) .....

iii) .....

iv) .....

7.3 कांग्रेस की स्थापना

20. हमने देखा कि किस प्रकार अंग्रेज़ों की शोषण नीतियों के कारण विभिन्न माध्यमों से भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना फैल रही थी। जनता में राजनीतिक जागरूकता आने के महत्वपूर्ण कारणों की हमने चर्चा की। राजनीतिक सुधारों के लिए राजा राममोहन राय ने सफल अभियान चलाया था। और भारतीयों की राजनीतिक संस्थाएँ बन रही थीं। 1837 में ही बंगाल, बिहार और उड़ीसा के ज़मींदारों ने अपने वर्ग-हित के लिए लैंड होल्डरों की स्थापना की थी। 1843 में सामान्य सार्वजनिक हितों की रक्षा के लिए बंगाल ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की गयी। इन दोनों संस्थाओं के विलय से 1851 में ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन की स्थापना हुई। ये संस्थाएँ धनी वर्ग के लिए बनी थीं। अतः इनसे जनता को कोई लाभ नहीं हुआ। 1866 में दादाभाई नौरोजी ने लंदन में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की। अपने लेखों के माध्यम से उन्होंने भारत की आर्थिक दरिद्रता के लिए ब्रिटिश शासन को दोषी बताया। जस्टिस रानाडे तथा अन्य लोगों ने पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना की। इसी प्रकार 1881 में मद्रास महाजन सभा एवं 1885 में बंबई प्रेसिडेंसी एसोसिएशन की स्थापना की गयी। इन संस्थाओं द्वारा सरकार के प्रशासनिक कार्यों की आलोचना की जाती थी। जिस ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन की स्थापना 1843 में हुई थी, उसके कार्यों से बंगाल के युवाओं में असंतोष की भावना फैल रही थी, क्योंकि यह संस्था केवल अमीर वर्ग के हित के लिए कार्य कर रही थी। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के रूप में एक तेज़स्वी नेता युवाओं को मिला। इनके द्वारा 1875 में इंडियन एसोसिएशन की स्थापना हुई। इस संस्था के द्वारा भारतीय जनता को सूत्रबद्ध करके राजनीतिक आंदोलन आरंभ किया गया। किंतु इन प्रयासों के बावजूद एक अखिल भारतीय संस्था की आवश्यकता महसूस की जा रही थी, जिसके द्वारा अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ़ एक व्यापक आंदोलन की शुरुआत की जा सके।

21. राजनीतिक राष्ट्रवादी कार्यकर्ता अखिल भारतीय संस्था की स्थापना की योजना बना रहे थे। एक सेवानिवृत्त सरकारी अंग्रेज़ अफसर ए.ओ. ह्यूम के माध्यम से इस योजना को एक व्यावहारिक रूप मिला। 1885 में 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना हुई और दिसंबर में बंबई में इसका पहला अधिवेशन हुआ। इसमें प्रमुख भारतीय नेता इकट्ठे हुए। इसकी अध्यक्षता उमेशचंद्र बनर्जी ने की। ह्यूम ने इस संस्था को इसलिए सहयोग दिया था कि ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ भारतीय जन-असंतोष को रोका जा सके, लेकिन इस संस्था के द्वारा भारतीयों में जागृति तथा अपने अधिकार की लड़ाई के लिए एक मंच मिला। आरंभ में छोटे पैमाने पर लेकिन संगठित रूप से इसके माध्यम से सामाजिक-आर्थिक सुधारों का आंदोलन प्रारंभ हुआ। आधुनिक उद्योग को बढ़ाने के लिए सरकार से सहायता की माँग की गई। किसानों पर करों के बोझ को कम करने के लिए आंदोलन चलाया गया। इस प्रकार के सुधारात्मक आंदोलन को अंग्रेज़ी सरकार ने उपेक्षा की दृष्टि से देखा। इस कारण

राष्ट्रवादी नेताओं ने आंदोलन का दूसरा तरीका अपनाया। कांग्रेस ऐसी संस्था थी जिसका रूप समय एवं परिस्थिति के अनुकूल बदलता रहा। इस संस्था के कार्य करने के तरीकों में परिवर्तन होता रहा। देश के बड़े-बड़े नेताओं को एक मंच पर लाने का श्रेय इसी संस्था को था। एक प्रकार से कांग्रेस देश की राष्ट्रीय पार्टी बन चुकी थी। सुरेन्द्रनाथ बनर्ज़ी, दादाभाई नौरोजी, बदरुद्दीन तैयब, फिरोज़शाह मेहता, पी. आनंद, चार्ले, रमेशचन्द्र दत्त, आनंद मोहन बोस और गोपाल कृष्ण गोखले आदि के अलावा महादेव गोविंद रानाडे, बालगंगाधर तिलक, मदन मोहन मालवीय एवं सी. विनयराघवाचारियर इसके प्रमुख नेता थे।

22. कुछ राष्ट्रवादी नेताओं ने जनता में जागृति लाने के लिए समाचार-पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ किया। तिलक के 'केसरी' एवं 'मराठा' पत्रों ने राष्ट्रीय आंदोलन को गति प्रदान की। संध्या, जुगांतर, पंजाबी आदि पत्रों से राष्ट्रीय आंदोलन में सहायता मिली।

23. अंग्रेज़ी सरकार भारत में उभरती हुई राष्ट्रीय चेतना से चिंतित थी। कांग्रेस के द्वारा जनता में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हो रहा था। जनता संगठित हो रही थी। इस पर अंकुश लगाने के लिए अंग्रेज़ों ने 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनायी। शासन की सुविधा का बहाना बनाकर 1905 में बंगाल विभाजन की घोषणा की गयी। देश को खंडित करने की इस साजिश से सारा देश आन्दोलित हो उठा। विभाजन के विरोध में जुलूस निकाले गए एवं सभाएँ आयोजित की गयीं। विदेशी वस्तुओं का **बहिष्कार** किया गया। चूँकि कांग्रेस सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व कर रही थी और एक शक्तिशाली संगठन के रूप में उभर रही थी। अतः अंग्रेज़ इसकी शक्ति को कमजोर करना चाह रहे थे। उन्हें इसके लिए अवसर भी मिला। मुस्लिम नेता जो कांग्रेस का समर्थन कर रहे थे उनका एक हिस्सा धीरे-धीरे कांग्रेस विरोधी हो गया। इसके कई कारण थे। पहला कारण यह था कि अंग्रेज़ों द्वारा उनमें यह भय उत्पन्न किया गया कि यदि कांग्रेस के हाथ में सत्ता आई तो बहुसंख्यक हिंदुओं के अधीन अल्पसंख्यक मुसलमानों को न्याय नहीं मिलेगा। दूसरा कारण यह था कि आधुनिक शिक्षा एवं ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के द्वारा जिस प्रकार की जागृति हिंदुओं में आयी, वैसी जागृति मुसलमानों में कम आयी। अतः उन पर प्रगतिशील विचारधारा का उतना असर नहीं पड़ा। तीसरा कारण यह था कि स्वतंत्रता संग्राम को गति देने के लिए तिलक आदि नेताओं ने गणेश उत्सव एवं शिवाजी उत्सव आरंभ किए। इन प्रयत्नों में हिंदू **रंगत** देखकर मुसलमानों के कुछ हिस्सों में संदेह उत्पन्न हुआ कि कांग्रेस द्वारा छेड़ा गया आंदोलन मात्र हिंदू आंदोलन है। परिणामस्वरूप 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इस पार्टी की स्थापना उच्च मुस्लिम वर्ग द्वारा हुई थी। सामान्य मुस्लिम जनता का शोषण तो उसी प्रकार हो रहा था जिस प्रकार हिंदू जनता का। अतः कुछ प्रगतिशील मुसलमान नेताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन का लगातार समर्थन किया। ऐसे नेताओं में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, मौलाना मुहम्मद अली, हकीम अज़मल खाँ, महज़रूल हक़ प्रमुख थे। इन मुस्लिम राष्ट्रवादी नेताओं के प्रयत्नों के बावजूद पृथकतावादी शक्तियों का प्रभाव बढ़ता रहा। 1905 में अंग्रेज़ों ने बंगाल विभाजन कर अपना हित साधना चाहा था, उसे पृथकतावादी शक्तियों ने समर्थन दिया। मुस्लिम लीग की स्थापना से अंग्रेज़ों को अपनी इच्छा पूरी करने में सहायता मिली। लीग ने बंगाल विभाजन का समर्थन किया और पृथक चुनाव की माँग की। लीग का दावा था कि मुसलमानों का हित शेष राष्ट्र के हित से अलग है। इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने में अंग्रेज़ों की "फूट डालो और शासन करो" की नीति सफल हुई। किंतु कांग्रेस के माध्यम से नेतागण राष्ट्रीय आंदोलन को आगे बढ़ाते रहे। 1916 में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में एक महत्वपूर्ण समझौता लीग एवं कांग्रेस के बीच हुआ, जिसे 'लखनऊ समझौता' के नाम से जाना जाता है। इसमें लीग एवं कांग्रेस के बीच के मतभेद को दूर किया गया, किंतु सरकार से पृथक निर्वाचन के आधार पर सुधार की माँग भी रखी गयी।

7.4 गांधी जी का आगमन

24. स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी का आगमन अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी। दक्षिण अफ्रीका प्रवास में उन्होंने वहाँ की जनता के अधिकारों के लिए कार्य किया था। अपने आंदोलन द्वारा

उन्होंने सरकार से जनता को अधिकार दिलाने में सफलता प्राप्त की। इस सफलता की चर्चा भारत तक भी पहुँची थी। 1912 में गोपाल कृष्ण गोखले दक्षिण अफ्रीका जाकर उनसे मिले थे और भारत आने को कहा। 1915 में भारत वापस आने पर गांधी जी ने पूरे देश का भ्रमण किया। यात्राओं द्वारा उन्होंने भारत की विपन्नता को करीब से देखा। देश की दुर्दशा देखकर उन्होंने देश-सेवा का संकल्प लिया। स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं में गांधी जी पहले नेता थे, जिन्होंने ग्रामीण जनता को भी इस आंदोलन से कुशलतापूर्वक जोड़ा था। सत्य एवं अहिंसा पर आधारित **'सत्याग्रह'** को उन्होंने आंदोलन का मुख्य आधार बनाया। वास्तविकता यह थी कि भारत की जनता अंग्रेज़ी शासन के शोषण से उत्पीड़ित थी; जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यहाँ के लोग पिछड़े हुए थे। भारतीयों की इस दुर्दशा का मुख्य कारण अंग्रेज़ी शासन था। इसके समाधान के लिए सरकार से सुधार का आग्रह किया गया। सरकार की दमनकारी नीतियों को परखने के बाद गांधी जी ने अधिकार की प्राप्ति के लिए आंदोलन शुरू किया तथा आगे चलकर पूर्ण स्वतंत्रता की माँग रखी।

25. गांधी जी ने यह भी देखा कि भारतीय लोगों के पिछड़ेपन का कारण यहाँ की सामाजिक व्यवस्था थी। अतः उन्होंने समाज सुधार के आंदोलन द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का अभियान चलाया। उन्होंने देखा कि भारतीय समाज में हिंदू और मुसलमान दोनों सद्भावपूर्वक साथ रह रहे हैं। लेकिन कुछ स्वार्थी तत्व अपने लाभ के लिए इनमें फूट डालने का प्रयत्न कर रहे हैं। देश की एकता एवं आंदोलन को सशक्त बनाने के लिए उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता को ज़रूरी समझा। अतः गांधी जी ने इन दोनों सम्प्रदायों की एकता को अपने कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण स्थान दिया।

26. गांधी जी ने अनुभव किया कि स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन में परिवर्तित करने पर ही अंग्रेज़ी शासन पर अधिक दबाव डाला जा सकता है। ग्रामीण जनता को अपने साथ लेकर स्वतंत्रता आंदोलन को उन्होंने जन-आंदोलन में बदल दिया। बिहार के चंपारन ज़िले में नील की खेती करने वाले किसानों पर योरोपीय बागान मालिकों का अत्याचार बढ़ गया था। उनका निर्मम शोषण किया जा रहा था। अन्य कांग्रेसी नेता किसानों की इस समस्या पर विचार-विमर्श में ही लगे थे कि गांधी जी किसानों की सहायता के लिए चल पड़े। **सविनय अवज्ञा** का देश में उनका यह पहला प्रयोग था। पुलिस की धमकियाँ उन्हें इस कार्य में आगे बढ़ने से रोक नहीं पायीं। अंत में सरकार ने समिति नियुक्त की तथा किसानों की शिकायतों को दूर करने के लिए कार्य किया। इस प्रकार देश में सविनय अवज्ञा के प्रथम प्रयोग में ही उन्हें सफलता मिली। 1918 में अहमदाबाद में मिल मज़दूरों को समुचित न्याय दिलाने के लिए उन्होंने आमरण अनशन किया। **अनशन** के चौथे दिन मिल मालिकों ने उनकी बात मानी और मज़दूरी में वृद्धि के लिए राज़ी हुए। गुजरात के खेड़ा ज़िले में किसानों के आंदोलन को समर्थन देकर उन्होंने जनता को जन आंदोलन के लिए संगठित किया। इस प्रकार गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन जन आंदोलन का रूप ग्रहण कर अत्यंत तीव्र गति से अग्रसर हुआ।

7.4.1 क्रांतिकारी देशभक्त

27. अंग्रेज़ों के बढ़ते अत्याचार के फलस्वरूप भारतीय युवा वर्ग में भी असंतोष बढ़ता जा रहा था। उन्हें कांग्रेस की अहिंसावादी अनुनय-विनय की नीति में विश्वास नहीं था। इसलिए इन भारतीय नवजवानों के एक क्रांतिकारी संगठन का उदय हुआ। क्रांतिकारियों का मानना था कि अत्याचारी शासकों के दिल में हिंसा द्वारा भय पैदा कर दिया जाए तो वे देश छोड़ने के लिए विवश हो जाएँगे। गुप्त समितियाँ बनाकर वे अपना उद्देश्य पूरा करना चाहते थे। महाराष्ट्र एवं बंगाल के युवाओं ने इस प्रकार की गतिविधियों में प्रमुखता से हिस्सा लिया। अनुशीलन समिति, जुगांतर, काल, संध्या मित्रमजेर, अभिनव भारत समाज आदि समितियों का गठन इसी उद्देश्य से हुआ था।

28. 1905 से 1918 के बीच क्रांतिकारी गतिविधियों की जाँच के लिए रौलट कमेटी की नियुक्ति हुई थी। इस कमेटी की सिफारिश पर सरकार ने कई कानून बनाये, जिनमें बिना

शामिल थे। न्यायाधीशों को बिना मुकदमें के फ़ैसला देने का अधिकार प्राप्त हो गया, जिन पर कोई सुनवाई भी संभव नहीं थी। 'रौलट एक्ट' को सरकार ने सैंट्रल लेजिस्लेटिव काउंसिल के सारे भारतीय सदस्यों के विरोध के बावजूद पास कर दिया। भारतीय जनता इस विश्वासघात को सहन नहीं कर सकी। देश में हड़तालों एवं जुलूसों की बाढ़.सी आ गयी। पंजाब में नेताओं की गिरफ्तारी पर जनता का क्रोध उबल पड़ा। हिंसा फैल गयी। जनरल डायर ने आतंक फैलाने के लिए 13 अप्रैल, 1919 को जलियाँवाला बाग में सभा के लिए एकत्र जनता पर बिना पूर्व चेतावनी के गोली चलाने का आदेश दिया। सैकड़ों लोगों की जानें गयीं और अनगिनत घायल हुए। इस नरसंहार से सारा देश शोकमग्न हो गया। विश्व कवि और मानवतावादी रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सर का सम्मान लौटा दिया। आंदोलन के द्वारा रौलट एक्ट को रद्द करने तथा जलियाँवाला बाग नरसंहार की क्षतिपूर्ति की माँग प्रारंभ हो गयी।

29. शिक्षित राष्ट्रवादी मुसलमान राष्ट्रीय आंदोलन को समर्थन दे रहे थे। रौलट कमेटी के विरोध में देश की सारी जनता एकजुट होकर आंदोलन कर रही थी। हिंदू हो या मुसलमान, सिक्ख हो या पारसी, सभी इस आंदोलन में एक मंच पर आए। धार्मिक विभेद को भुलाकर एक संगठित शक्ति के रूप में जनता ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेज़ों ने तुर्की के खलीफ़ा के पद को समाप्त कर दिया था। उनकी इस कार्रवाई का विरोध करने के लिए भारत में अली बंधुओं, मौलाना आज़ाद, हकीम अज़मल खाँ ने मिलकर "खिलाफ़त कमेटी" बनायी और अंग्रेज़ों के विरुद्ध देशव्यापी आंदोलन शुरू किया। गांधी जी एवं तिलक ने इस आंदोलन को समर्थन देकर सिक्ख, हिंदू, मुसलमान, पारसी सभी को एक मंच पर लाकर आंदोलन को मज़बूत किया। खिलाफ़त आंदोलन के द्वारा गांधी जी ने सरकार के साथ असहयोग आंदोलन आरंभ किया। इसमें सरकारी दफ़्तरों में काम न करना, अदालतों, शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार करना शामिल था। इस प्रकार आंदोलन का निर्णायक दौर प्रारंभ हुआ। सरकार ने रौलट एक्ट को रद्द करने एवं जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड की क्षतिपूर्ति करने से इनकार कर दिया था। इस निर्णय को देखते हुए 1920 में नागपुर के कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में गांधी जी ने 'करो या मरो' का नारा दिया। सरकारी वकीलों ने वकालत छोड़ दी। हज़ारों छात्रों ने सरकारी स्कूलों का बहिष्कार किया। विदेशी कपड़ों की होली जलायी गयी। लेकिन इस व्यापक आंदोलन को उस समय धक्का लगा जब उत्तर प्रदेश के देवरिया ज़िले में चौरी चौरा गाँव में किसानों के जुलूस पर पुलिस ने गोलियाँ चलायीं। क्रोध में आंदोलनकारियों की भीड़ ने थाने पर हमला कर दिया और वहाँ आग लगा दी। इस घटना में कई सिपाही मारे गये। गांधी जी को इस घटना के बाद विश्वास हो गया कि जनता के अंदर अहिंसक आंदोलन द्वारा सरकार के साथ प्रतिरोध करने की शक्ति नहीं बन पायी है। अतः सरकार हिंसक आंदोलन को आसानी से कुचल सकती है। इसी कारण गुजरात के बारदोली नामक स्थान में कांग्रेस की बैठक हुई और एक प्रस्ताव पास कर गांधी जी ने लोगों से आंदोलन बंद कर रचनात्मक कार्य करने के लिए आग्रह किया। नेताओं को गांधी जी के इस निर्णय से धक्का लगा। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए अंग्रेज़ों ने गांधी जी पर राजद्रोह का अभियोग लगाकर उन को छह साल कैद की सजा दी, जिसके फलस्वरूप गांधी जी को फिर अपना निर्णय बदलना पड़ा। वे ब्रिटिश शासन के कटु आलोचक बन गए।

30. आंदोलन की गति धीमी पड़ने के साथ-साथ बीच-बीच में सांप्रदायिक दंगे होने लगे। लेकिन गांधी जी हिंदू-मुसलमान एकता के लिए सदा प्रयत्नशील रहे। इस कार्य के लिए उन्होंने अनशन का भी सहारा लिया।

बोध प्रश्न

7. ईसाई धर्म प्रचारकों तथा आधुनिक शिक्षा के फलस्वरूप भारतीय समाज में एक परिवर्तन का दौर शुरू हुआ। आप ऐसी दो संस्थाओं एवं उनके संस्थापकों के नाम बताएँ जिन्होंने ऐसे आन्दोलन शुरू किए। (पैरा 18)

संस्था	संस्थापक
.....	.....
.....	.....

8. नवजागरण के फलस्वरूप भारतीयों में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ। कई प्रकार की राजनीतिक संस्थाएँ बनायी गयीं। आप उस व्यापक संस्था तथा उस विदेशी व्यक्ति का नाम बताइए, जिसके प्रयास से यह संस्था अस्तित्व में आई। (पैरा 21)

   व्यक्ति : .....

   संस्था : .....

9. बंगाल विभाजन के द्वारा अंग्रेज़ (पैरा 23)

   i) शासन को ठीक ढंग से चलाने का प्रबंध करना चाहते थे।

   ii) धर्म के नाम पर भारतवासियों की एकता को समाप्त करना चाहते थे।

   iii) आपस में राज्य का बँटवारा करना चाहते थे।

   iv) भाषा के नाम पर बँटवारा करना चाहते थे। [ ]

10. निम्नलिखित खाली जगहों में उचित शब्द भरें।

    गांधी जी ने आंदोलन को एक नया मोड़ दिया; भारतीयों में एक नया उत्साह भरा। लेकिन वे पहले नेता थे, जिन्होंने ..... जनता को भी स्वतंत्रता आंदोलन में मिला लिया। (पैरा 24)

11. 1919 में आतंक फैलाने के लिए ..... ने जलियाँवाला बाग में एकत्र जनसमूह का संहार किया। स्वतंत्रता आंदोलन का रूप इसके बाद और भी व्यापक हो गया। इसी समय अजमल खाँ, अली बंधुओं आदि ने मिलकर एक संस्था बनायी जिसमें सभी धर्मों के लोगों ने मिलकर आंदोलन शुरू किया। ..... एकता का यह एक महत्वूपर्ण प्रयास था। इस संस्था का नाम था ..... कमेटी। (पैरा 29)

7.4.2 साइमन कमीशन

31. सरकार ने जॉन साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन की नियुक्ति की थी, जिसे "साइमन कमीशन" के नाम से जाना जाता है। इस कमीशन के द्वारा सरकार यह पता लगाना चाहती थी कि देश में संसदीय जनतंत्र के लिए वातावरण बन गया है या नहीं। किंतु सबसे बड़ी बात यह थी कि सात सदस्यों के इस कमीशन में एक भी भारतीय नहीं था। इसी कारण भारत पहुँचने पर यह कमीशन जाँच पड़ताल के लिए जहाँ-जहाँ गया, वहाँ-वहाँ इसके विरोध में प्रदर्शन हुए। पंजाब में लाला लाजपत राय एवं पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारी जुलूस निकाला गया। 'साइमन वापस जाओ' के नारों से आकाश गूँज उठा। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर बेरहमी से लाठी प्रहार किया, लाला लाजपत राय लाठी प्रहार से घायल हुए। इसमें लगी गंभीर चोट के कारण ही उनकी मृत्यु भी हुई। परिणामतः क्रांतिकारियों ने हिंसा का रास्ता अपनाया। सरकार ने कमीशन के विरोध में हो रहे प्रदर्शन को सख्ती से दबाना चाहा; किंतु आंदोलन की इस बाढ़ को सरकार रोक नहीं पायी। कांग्रेस के 1929 के लाहौर अधिवेशन से आंदोलन ने व्यापक और तीव्रतर रूप धारण कर लिया। इसमें अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू ने "पूर्ण स्वराज्य" का नारा दिया। 26 जनवरी, 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गयी। गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को फिर से शुरू कर दिया।

32. नमक पर सरकार ने कर लगा रखा था। नमक जीवन की आवश्यक वस्तुओं में से एक है। गरीब, अमीर सब समान रूप से इसका उपयोग करते हैं। जीवन की इस आवश्यक वस्तु पर कर लगाना अन्यायपूर्ण था। गांधी जी ने इस अन्यायपूर्ण कानून को समाप्त करने के लिए सरकार से अनुरोध किया। सरकार ने इस अनुरोध को ठुकरा दिया। तब गांधी जी ने "नमक कानून" तोड़ने की योजना बनायी। उन्होंने गुजरात राज्य में अहमदाबाद से दांडी तक की यात्रा की और जगह-जगह नमक बनाकर इस कानून का उल्लंघन किया। इस अभियान के द्वारा गांधी जी ने यह दिखा दिया कि सरकार द्वारा बनाये गये अन्यायपूर्ण कानून के अंकुश में भारतीय जनता नहीं रहना चाहती। सारे देश में इसी प्रकार के आयोजनों द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन को बढ़ाया गया। गांधी जी गिरफ्तार कर लिए गए। इस गिरफ्तारी से देश का वातावरण फिर से अशांत हो उठा।

33. इन्हीं दिनों लंदन में साइमन कमीशन की रिपोर्ट पर चर्चा के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसे पहला गोलमेज़ सम्मेलन कहा गया। कांग्रेस ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया। वह चाहती थी कि सम्मेलन से पूर्व गांधी जी तथा अन्य नेताओं को जेल से छोड़ दिया जाए। सरकार ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और वायसराय द्वारा मनोनीत सदस्यों के साथ ही सम्मेलन शुरू हुआ। गांधी जी एवं कांग्रेस के प्रतिनिधित्व के बिना यह सम्मेलन असफल रहा।

34. सरकार ने 'दूसरे गोलमेज़ सम्मेलन' के लिए कांग्रेस को राज़ी करने का प्रयास किया। इस प्रयास के परिणामस्वरूप लार्ड इरविन एवं गांधी जी के बीच बातचीत हुई। बातचीत में कांग्रेस द्वारा प्रस्तावित स्वतंत्रता आन्दोलन के कार्यकर्ताओं एवं क्रांतिकारियों को फाँसी की जगह आजीवन कारावास की बात को अलग रखा गया। अंत में एक समझौता हुआ, जिसके तहत सिर्फ़ अहिंसक बंदियों को रिहा करने की बात थी। इसे गांधी-इरविन समझौते के नाम से जाना जाता है। कांग्रेस के एक वर्ग ने इस समझौते का विरोध किया। क्रांतिकारी भगत सिंह, राजगुरू एवं सुखदेव को फाँसी दे दी गयी। सरकार के इस कार्य से जनता में तीव्र आक्रोश पैदा हुआ।

35. सांप्रदायिक शक्तियों के विरोध के कारण आंदोलन पर प्रभाव पड़ रहा था। मुस्लिम लीग एवं हिंदू महासभा अपने.अपने सम्प्रदाय के हित की बात कह कर हिंदू-मुस्लिम एकता में बाधा पहुँचा रहे थे। जिन्ना आदि नेतागण कांग्रेस छोड़कर पृथक् क्षेत्र की माँग करने लगे थे। किंतु गांधी जी एवं प्रगतिशील मुसलमान नेताओं ने सदा एकता पर बल दिया।

36. दूसरे गोलमेज़ सम्मेलन में अंग्रेज़ों की चाल द्वारा पृथकतावादी वर्ग को लाभ पहुँचा। सम्मेलन में गांधी जी, मदन मोहन मालवीय एवं सरोजनी नायडू प्रतिनिधि रूप में थे। गांधी जी द्वारा डॉ. अंसारी का प्रस्तावित नाम काट दिया गया था। इस कारण सरकार को यह कहने का मौका मिला कि कांग्रेस सभी सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। सम्मेलन में गांधी जी के तर्कपूर्ण उत्तर के बावजूद सरकार ने कांग्रेस के औपनिवेशिक स्वराज्य की माँग को ठुकरा दिया। निराश होकर गांधी जी भारत लौटे और नये सिरे से सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू कर दिया।

7.4.3 चुनाव

37. 1932 में तीसरा गोलमेज़ सम्मेलन हुआ। कांग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया। इस सम्मेलन में विचार-विमर्श के बाद 1935 में 'गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया एक्ट' पास किया गया। इस एक्ट के द्वारा अखिल भारतीय संघ तथा प्रांतीय स्वायत्तता के आधार पर प्रांतों के लिए सरकार की नयी प्रणाली बनायी गयी, जिसमें राजनीतिक एवं आर्थिक अधिकार ब्रिटिश सरकार के हाथों में ही रहे। जनता द्वारा चुने गये केवल थोड़े से सदस्यों को प्रशासन में शामिल कर सरकार दिखाना चाहती थी कि वह भारतीयों का हित चाहती है। कांग्रेस ने इस एक्ट की आलोचना की। एक्ट का प्रांतीय हिस्सा लागू किया गया। एक्ट का घोर विरोध होने पर भी कांग्रेस ने उसके तहत होने वाले चुनाव में भाग लिया। चुनाव में असाधारण सफलता प्राप्त कर कांग्रेस ने 11 प्रांतों में से 7 में अपनी सरकार बनायी। दो राज्यों में साझा सरकारों का

7.4.4 अंतर्राष्ट्रीय घटनाएँ

38. कांग्रेस ने आरंभ से ही साम्राज्यवाद का विरोध किया। एशिया एवं अफ्रीका में ब्रिटिश हितों के लिए भारतीय सेना का इस्तेमाल किया जाता था। कांग्रेस ने इसका विरोध किया। इटली, जर्मनी और जापान में साम्राज्यवाद तथा नस्लवाद के तहत उठ रहे फ़ासीवाद का कांग्रेस ने विरोध किया। इन्हीं दिनों विश्व के मानचित्र पर ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं, जिन्होंने सारे विश्व को प्रभावित किया। पूँजीवादी राष्ट्र अमेरिका में आर्थिक मंदी तथा समाजवादी राष्ट्र रूस में चौगुनी प्रगति महत्वपूर्ण घटना थी। इस महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रभाव भारत पर पड़ा। कांग्रेस के भीतर एवं बाहर आंदोलनकारी नेताओं में **समाजवादी विचारधारा** अंकुरित हो रही थी। समाजवादी विचारधारा का अर्थ है राजनीतिक एवं सामाजिक ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन। इसके तहत अमीरी एवं गरीबी के भेद को मिटाकर समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार की व्यवस्था होती है। इन्हीं प्रवृत्तियों के कारण वामपंथी पार्टी तथा 'कांग्रेस समाजवादी पार्टी' का जन्म हुआ। 'भारतीय किसान सभा' तथा 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना भी इन्हीं परिस्थितियों में हुई।

39. हिटलर के फ़ासीवाद का प्रभाव बढ़ने लगा। अपनी विस्तार की नीति के कारण उसने पोलैंड पर आक्रमण किया और इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई। राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ बिना विचार-विमर्श किये अंग्रेज़ी सरकार ने युद्ध में शामिल होने की घोषणा कर दी। कांग्रेस ने इस घोषणा का विरोध किया। कांग्रेस ने सरकार से प्रश्न किया कि एक परतंत्र देश किस प्रकार युद्ध में सहायता कर सकता है। अतः भारत की स्वतंत्रता की घोषणा की जानी चाहिए। सरकार ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। परिणामस्वरूप कांग्रेस मंत्रिमंडल ने त्यागपत्र दे दिया। विश्व युद्ध की लपटें भारत की ओर बढ़ने लगीं। अतः ब्रिटिश सरकार के लिए भारतीयों का सहयोग ज़रूरी हो गया। इस उद्देश्य के लिए ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल ने स्टैफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में 1942 में एक मिशन भेजा। यह मिशन असफल रहा, क्योंकि सरकार ने कांग्रेस की तुरंत सत्ता हस्तांतरण की बात अस्वीकार कर दी।

40. पृथक् निर्वाचन के आधार पर चुनाव के कारण पृथक्तावादी भावनाएँ जन्म ले चुकी थीं। कांग्रेस ने अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित सीट रखी थी लेकिन चुनाव में आरक्षित 482 सीटों में से केवल 26 सीटें ही वह प्राप्त कर पायी। मुस्लिम लीग भी अधिक सीट नहीं जीत पाई थी। जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने कांग्रेस का विरोध शुरू कर दिया और यह प्रचार किया गया कि अल्पसंख्यक मुसलमानों को बहुसंख्यक हिंदुओं से खतरा है, अतः मुसलमानों का हित अलग होने में है। मुस्लिम लीग ने 1940 में पाकिस्तान की माँग रखी। राष्ट्रीय आंदोलन को इन घटनाओं से धक्का तो अवश्य लगा, लेकिन आंदोलन जारी रहा।

7.5 भारत छोड़ो आंदोलन

41. क्रिप्स मिशन के असफल होने पर कांग्रेस ने महसूस किया कि आंदोलन को ऐसा रूप दिया जाए जिससे बाध्य होकर अंग्रेज़ी सरकार भारतीयों की स्वतंत्रता की माँग मान ले। 8 अगस्त, 1942 को बंबई में कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई और ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया गया। इस प्रस्ताव में कहा गया कि भारत पर ब्रिटिश शासन की समाप्ति होना राष्ट्र के लिए आवश्यक है। भारत साम्राज्यवाद की मूल भूमि बन गया है अतः स्वतंत्रता की दृष्टि से ब्रिटेन एवं संयुक्त राष्ट्र संघ को परखा जाएगा। एशिया अफ्रीका की जनता इस स्वतंत्रता से आशा से भर जाएगी। स्वतंत्र भारत अपने विशाल संसाधनों द्वारा नाज़ीवाद, फ़ासिज़्म और साम्राज्यवाद के खिलाफ़ संघर्ष में सहायता देगा।

7.5.1 नेताजी की आज़ाद हिंद फ़ौज

42. आंदोलन की शुरुआत से पहले ही 9 अगस्त, 1942 को गांधी जी सहित सारे नेता बंदी बना लिये गये। कांग्रेस को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया। जनता ने आंदोलन को जारी रखा। सरकार ने जन आंदोलन को दबाने के लिए अपनी सारी शक्ति का प्रयोग किया।

स्वतंत्रता आंदोलन को एक नये तरीके से सफल बनाने किए नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने अभियान शुरू किया। उनका मानना था कि देश को सैनिक शक्ति के बल पर स्वतंत्र किया जा सकता है। अपने उद्देश्य के लिए 1941 में वे देश से गुप्त रूप से निकल भागे। भारत को स्वतंत्र कराने के लिए सैनिक अभियान की योजना बनायी। रूस होते हुए वे जर्मनी पहुँचे। फिर 1943 में जापान पहुँच गये। उन्होंने सैनिक अभियान के लिए 'आज़ाद हिंद फ़ौज' की स्थापना की। उनके द्वारा चलाया गया सैनिक अभियान कुछ सफल भी रहा। भारत के पूर्वी हिस्से के कुछ भाग पर आज़ाद हिंद फौज़ ने अधिकार भी जमा लिया। नेता जी की विमान दुर्घटना में रहस्यमय मृत्यु के कारण यह अभियान सफल न हो सका।

7.5.2 स्वतंत्रता प्राप्ति

43. यद्यपि विश्व युद्ध में मित्र देशों की विजय हुई थी, तथापि युद्ध के दौरान ब्रिटेन की आर्थिक एवं सैनिक शक्ति को बहुत अधिक क्षति पहुँची थी। समाजवादी देशों के समर्थन से सारे विश्व में औपनिवेशिकता के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद हुई । ब्रिटेन की राजनीति में भी एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आ गया। कंज़रवेटिव पार्टी की जगह लेबर पार्टी सत्ता में आयी। नयी सरकार के बहुत से सदस्यों ने कांग्रेस की स्वराज्य की माँग का समर्थन किया। इसी समय भारत में पृथक्तावादी शक्तियों ने धर्म के आधार पर अलग क्षेत्र की माँग प्रारंभ कर दी। दूसरी ओर आज़ाद हिंद फ़ौज के सैनिकों एवं अफ़सरों पर अंग्रेज़ी सरकार ने देशद्रोह का अभियोग लगाकर मुकदमा चलाया। इसके विरोध में भारतीय जनता ने जन आंदोलन चलाया। 1946 में बंबई में भारतीय नौसेना के कर्मचारियों ने विद्रोह किया। ब्रिटिश फ़ौज के साथ कई घंटे तक युद्ध हुआ। भारतीय नेताओं के हस्तक्षेप पर यह संघर्ष समाप्त हुआ। भारतीय जनता अब और अधिक दिनों तक अंग्रेज़ों के अत्याचार को नहीं सहना चाहती थी। सारे देश में हड़तालों एवं जुलूसों का ताँता लग गया। इन सब घटनाओं को देखते हुए 1946 में सरकार ने सत्ता हस्तांतरण पर विचार के लिए कैबिनेट मिशन भेजा। विभिन्न दलों के साथ लंबी बातचीत के बाद मिशन ने जो रूपरेखा प्रस्तुत की, उसे कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग दोनों ने स्वीकार किया। सितम्बर 1946 में जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में मंत्रिमंडल का गठन हुआ, जिसमें मुस्लिम लीग भी शामिल हुई। ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने जून 1948 तक भारतीयों के हाथ सत्ता सौंपने की घोषणा की। लेकिन इस बीच सांप्रदायिक शक्तियों के कारण व्यापक हिंसा की घटनाएँ हुईं। गांधी जी के अथक प्रयास के बावजूद हिंसा की वारदातें रुक नहीं पायीं। मार्च 1947 में लार्ड माउंटबेटन वाइसराय के रूप में भारत आये कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच विचार-विमर्श का लंबा दौर चला और अंत में देश के बँटवारे की बात मान ली गयी। इस तरह लंबे संघर्ष का अंत 15 अगस्त, 1947 को हुआ और स्वतंत्रता आंदोलन की यह लंबी कहानी समाप्त हुई।

बोध प्रश्न

12. अहमदाबाद से दांडी तक की यात्रा कर महात्मा गांधी ने नमक कानून का उल्लंघन किया। इसके पीछे गांधी जी का क्या उद्देश्य था? (पैरा 32)

    i) गरीबों पर पड़ रहे बोझ को समाप्त करवाना

    ii) स्वतंत्रता आंदोलन को और व्यापक बनाना

    iii) गुजरात में आंदोलन को तेज़ करना

    iv) जनता को नमक कानून के बारे में बताना [ ]

13. भारतीय नेताओं ने देखा कि अंग्रेज़ भारतवासियों को सत्ता सौंपने के पक्ष में नहीं हैं। अतः उन्हें इस कार्य के लिए मजबूर किया जाए।

    ..... में ..... में .....
    प्रस्ताव पास कर नेताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन का निर्णायक दौर शुरू किया। (पैरा 41)

14. 1942 के बाद गांधी जी के नेतृत्व में चल रहे अहिंसक आंदोलन के विपरीत देश को स्वतंत्र कराने का एक अलग प्रयास किया गया। आप बताइए कि ऐसा प्रयास किसने किस रूप में किया? (पैरा 42)

.....

.....

.....

.....

15. आप दो वाक्यों में बताएँ कि किस कारण समय से पहले ही स्वतंत्रता की घोषणा की गयी। (पैरा 43)

.....

.....

16. सही मिलान करें (पूरे पाठ के आधार पर)

	घटना		परिणाम
क)	प्लासी की लड़ाई	i)	भारतीय कुटीर उद्योग का पतन
ख)	औपनिवेशिक शासन की स्थापना	ii)	समाचार-पत्रों का प्रकाशन
ग)	1857 का विद्रोह	iii)	लाला लाजपत राय की मृत्यु
घ)	प्रेस की स्थापना	iv)	अंग्रेज़ी शासन का प्रारंभ
ङ)	साइमन कमीशन	v)	शासन का भार ब्रिटिश सरकार के हाथ में जाना

7.6 वर्तनी संबंधी कुछ नियम

यह इकाई भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित है। यह इतिहास विषय की इकाई है। इस इकाई में इतिहास संबंधी कई शब्द प्रयुक्त हैं। जैसें-आन्दोलन, अधिवेशन, स्थापना, राष्ट्रीय, संगठित आदि। किसी विषय-विशेष से संबंधित शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहते हैं। पारिभाषिक शब्दों की और चर्चा हम इस खंड की अन्य इकाइयों में करेंगे। इन शब्दों के सही प्रयोग का एक प्रमुख पहलू शब्दों की वर्तनी है। इस इकाई में हम प्रमुख रूप से शब्दों की वर्तनी की चर्चा करेंगे और सही वर्तनी क्या है, इसके बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

7.6.1 प्रत्ययों से शब्द-रचना

जैसा कि आप जानते हैं, भाषा के बहुत सारे शब्द दूसरे शब्दों के मेल से बनते हैं। जैसे दया शब्द से निर्दय, दयावान, दयनीय, दयालु आदि शब्द बनते हैं। इसे प्रत्यय प्रयोग कहते हैं। अगर प्रत्यय का सही ज्ञान हो तो प्रत्यय से बनने वाले शब्दों में वर्तनी-दोष नहीं होता। दूसरे शब्दों में उस प्रत्यय से बनने वाले सभी शब्दों की वर्तनी का ज्ञान हो जाता है। हम इस इकाई के तथा इकाई से भिन्न कुछ और शब्दों के उदाहरणों से इस बात को यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

i) प्रत्यय "ईय" : इस प्रत्यय से बनने वाले शब्दों में दीर्घ /ई/ को आप पहचान सकते हैं। स्थानीय, केंद्रीय, भारतीय, दयनीय, राष्ट्रीय, स्मरणीय, पूजनीय। इन शब्दों में 'दया' से 'दयनीय' बनता है, 'पूजा' से 'पूजनीय'। बाकी 'स्थान', 'भारत' आदि शब्दों से बनें हैं।

ii) प्रत्यय "इक" : इस प्रत्यय से बनने वाले शब्दों के बारे में हम इंकाई 5 में चर्चा कर चुके हैं। कुछ उदाहरण और देखिए-न्यायिक, आर्थिक, तार्किक, मानसिक, सामाजिक, सांसारिक, व्यापारिक। हम अन्य शब्दों की रचना की बात कर चुके हैं। आप यह ध्यान रखें कि मन से मानसिक बनता है।

iii) प्रत्यय "इत" : यह प्रत्यय विभिन्न प्रकार के शब्दों में जुड़ता है। मूल शब्द का रूप तथा प्रत्यय वाला रूप दोनों को देखकर रचना को पहचानें।

विकास	-	विकसित	उपेक्षित, प्रदर्शित
स्थापना	-	स्थापित	कुपित, क्रोधित
उत्पादन	-	उत्पादित	संगठित, सम्मानित
घोषणा	-	घोषित	शोषित, पराजित
व्यवस्था	-	व्यवस्थित	अवस्थित, संशोधित

iv) प्रत्यय "ई" : संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाने के लिए इस प्रत्यय का उपयोग होता है, जैसे विजयी, पूर्वी, स्वार्थी, विरोधी आदि। कुछ अन्य शब्दों में जिनके अंत में आ आता है उसमें रचना के उदाहरण देखिए।

भाषा - भाषाई एशिया - - एशियाई

"स्थांयी" शब्द को "स्थाई" नहीं लिखना चाहिए।

v) प्रत्यय "इ" आपने देखा होगा कि "इ" प्रत्यय सिर्फ़ संस्कृत शब्दों में आता है। जब हम अंग्रेज़ी या उर्दू शब्दों को हिंदी में लिखते हैं तो शब्द के अंत में कभी ह्रस्व "इ" का प्रयोग नहीं होता। कुछ उदाहरण देखिए।

अंग्रेज़ी शब्द : कमेटी, यूनिवर्सिटी, सोसायटी, अंग्रेज़ी, जनवरी, नर्सरी, सीनरी।

उर्दू शब्द : बरबादी, परेशानी, बीमारी, आख़िरी, देहाती, काफ़ी, ज़रूरी।

ये संस्कृत शब्द ज्यादातर विशेषण से बनते हैं

शांत	-	शांति	प्राप्त	-	प्राप्ति
उन्नत	-	उन्नति	जागृत	-	जागृति

"ई" प्रत्यय वाले कुछ और शब्द देखिए और इनकी वर्तनी पर ध्यान दीजिए।

पुष्टि, प्रगति, समष्टि, व्यक्ति, क्रांति, शक्ति, भक्ति, गति, प्रकृति।

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों में "इ" या "ई" प्रत्यय लगाकर संज्ञा शब्द बनाइए।

समाप्त..... दक्षिण.....

क्रोध..... अभिव्यक्त.....

उपलब्ध..... समुद्र.....

विकृत..... जापान.....

2. निम्नलिखित शब्दों में "इत" या "ईय" प्रत्यय उचित ढंग से लगाकर विशेषण शब्द बनाइए।

अपमान..... नगरी.....

इच्छा..... अंकुर.....

प्रांत..... संग्रहण.....

उच्चारण..... विभाग.....

7.6.2 वर्तनी के दो रूप

आपने देखा होगा कि इस पाठ्य सामग्री में भी हमारी कोशिशों के बावजूद कुछ शब्द दो वर्तनी रूपों में आ गये हैं। हिंदी में गए-गये, गई-गयी दोनों रूप चलते हैं। इसी तरह कुछ अन्य शब्दों में भी यह स्थिति है -

इसलिए - इसलिये नये - नए

हम मान सकते हैं कि फिलहाल दोनों रूप सही हैं।

हिंदी में उर्दू तथा अंग्रेज़ी से आये हुए कुछ शब्दों में भी यह स्थिति दिखाई पड़ती है। इनमें भी हम दोनों वर्तनी रूपों को सही मान सकते हैं । उदाहरण के लिए

बर्बादी	-	बरबादी	बिल्कुल	-	बिलकुल
सरकस	-	सर्कस	नुक्सान	-	नुकसान
भर्ती	-	भरती	गर्मी	-	गरमी

संस्कृत से आये हुए कुछ शब्दों में भी हम वर्तनी के दो रूप देखते हैं। दोनों सही माने जाएँगे :

महत्व	-	महत्त्व	कर्तव्य	-	कर्त्तव्य
अर्ध	-	अर्द्ध	पूर्ति	-	पूर्त्ति

अभ्यास

3. निम्नलिखित शब्दों में जो सही है उन्हें ठीक चिह्न (√) से दिखाएँ।

असंगती	स्थापित	सरदी
गिरफ्तारि	स्थानिय	उन्नति
स्थाई	पार्टी	पूर्ती
अनीती	कारीगरी	राजनीती
बर्फ़	धार्मीक	विरोधि

7.6.3 पाठ में प्रयुक्त कुछ शब्दों की वर्तनी की विशेषताएँ

i) प्रत्यय पूर्ण, स्वरूप, हीन, शील, शाली आदि मूल शब्द के साथ मिलकर आते हैं। उदाहरण के लिए, महत्वपूर्ण, परिणामस्वरूप, शक्तिहीन, प्रगतिशील, शक्तिशाली।

ii) संस्कृत के हलंत् वाले कुछ शब्द हिंदी में दोनों तरह से लिखे जाते हैं।

उदाहरण के लिए :

पृथक - पृथक्

अन्य कुछ शब्द हैं :

पश्चात-पश्चात्	संसद - संसद्
आत्मसात-आत्मसात्	वृहद - वृहद्
परिषद-परिषद्	

iii) दो शब्दों में अंतर देखिए।

शुरू शुरुआत

iv) कुछ अंग्रेज़ी शब्द उच्चारण की विशेषता के कारण "ए" से लिखे जाते हैं, किंतु उनका उच्चारण "ऐ" जैसा होता है : एक्ट, एसोसिएशन। इसी तरह . एडवोकेट, एटलस, एटम।

v) संस्कृत शब्द "उपरि" से दो शब्द बनते हैं :

उपरिलिखित - ऊपर लिखा गया

उपर्युक्त (उपरि + उक्त) - ऊपर बताया गया।

कई लोग अक्सर "उपरोक्त" लिखते हैं जो गलत है।

अभ्यास

4. निम्नलिखित शब्दों में संधि.विच्छेद कीजिए जिससे मूल शब्द और प्रत्यय दिखाई पड़ें।

विश्वसनीय.....	पश्चिमी.....
स्थायित्व.....	समाजवादी.....
एशियाई.....	गतिशील.....
शुरुआत.....	संतुष्टि.....
फलस्वरूप.....	आयोजित.....
समर्थित.....	अशांति.....
पीड़ित.....	संबंधित.....

7.7 शब्दावली*

1. **प्रतिद्वन्द्वी** : सामने आकर लड़ने या विरोध करने वाला। अंग्रेज़ों ने अपने प्रतिद्वन्द्वी डच, फ्रांसीसी को युद्ध में हराया।

2. **सनद** : प्रमाण, सबूत, प्रमाण-पत्र। ईस्ट इंडिया कंपनी को एक सनद द्वारा व्यापार के लिए विशेषाधिकार दिया गया।

3. **बग़ावत** : विद्रोह। औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद कई राज्य बग़ावत करके स्वतंत्र हो गये।

7. **फ़रमान** : वह पत्र जिस पर राजा की आज्ञा हो। कंपनी को मुगल बादशाह से एक फ़रमान प्राप्त हुआ।

9. **भूराजस्व** : भूमि कर। अंग्रेज़ों की भूराजस्व व्यवस्था से किसानों को अत्यधिक हानि हुई।

23. **बहिष्कार** : सब प्रकार का संबंध छोड़ देना। गांधी जी ने जनता से विदेशी वस्तुओं के बहिष्कारका आह्वान किया।

23. **रंगत** : स्पर्श, छाप/गणेश उत्सव आदि में हिंदू रंगत देखकर मुसलमानों में संदेह उत्पन्न हुआ।

24. **सत्याग्रह** : सत्य के लिए आग्रह। स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी ने प्रारंभ से अंत तक

26. **अवज्ञा** : आज्ञा न मानना। चंपारन में गांधी जी ने सर्वप्रथम सविनय अवज्ञा द्वारा आंदोलन की शुरुआत की।

28. **नज़रबंदी** : किसी को ऐसी निगरानी में रखना जिससे कि वह निश्चित स्थान या सीमा के बाहर न जा सके।

26. **अनशन** : भोजन न करना, खाना छोड़ देना। हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए गांधी जी ने अनशन का भी सहारा लिया।

38. **समाजवादी विचारधारा** : ऐसी विचारधारा जिसमें सभी को समान रूप से अधिकार प्राप्त हो चाहे वह राजनीतिक हो या सामाजिक। रूस में पनपी समाजवादी विचारधारा ने स्वतंत्रता संग्राम पर प्रभाव डाला।

7.8 सारांश

इस इकाई में आपने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अध्ययन किया।

आपने इतिहास का प्रकरण पढ़ा जिससे आप स्वतंत्रता संग्राम के महत्व को बता सकते हैं, स्वतंत्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास बता सकते हैं, और

- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान घटी घटनाओं के कारणों का विश्लेषण कर सकते हैं।

साथ ही आपने

- प्रत्ययों द्वारा शब्द-रचना विशेषकर पारिभाषिक शब्दों की रचना को पहचाना और उनका सही प्रयोग करना सीखा।
- प्रत्ययों द्वारा शब्द-रचना के ज्ञान से सही वर्तनी का प्रयोग करना सीखा।
- मूल शब्दों के साथ विभिन्न प्रत्यय जोड़कर नये शब्द बनाना सीखा।
- मूल शब्द के साथ जुड़कर आने वाले विभिन्न प्रत्ययों को पहचाना, जिससे अन्य शब्द बना सकते हैं।
- वर्तनी के दो रूपों, जैसे नए-नये, बिल्कुल-बिलकुल, महत्व-महत्त्व, अर्ध-अर्द्ध आदि को पहचाना, जिससे अपने लेखन में एकरूपता रख सकते हैं।

7.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

विपिन चंद्र, अमलेश त्रिपाठी एवं वरुण दे; **स्वतंत्रता संग्राम**। अनुवादक : रामसेवक श्रीवास्तव, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली-110 016.

बिपिन चंद्र : **आधुनिक भारत**, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110 016.

नोट - 'स्वाधीनता संग्राम और जन आंदोलन' नामक ऑडियो इस इकाई से संबंधित है। आप इस ऑडियो को सुनें।

7.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. iv
2. i) मछलीपट्टनम, ii) मद्रास
3. iv
4. i
5. 1) भारतीय राज्यों की आपसी शत्रुता, 2) अंग्रेज़ों की कूटनीति
6. i) सड़क यातायात व्यवस्था, ii) रेल व्यवस्था,

   iii) डाक व्यवस्था, iv) तार व्यवस्था
7. ब्रह्म समाज; राजा राममोहन राय

   आर्य समाज; स्वामी दयानंद सरस्वती
8. अखिल भारतीय कांग्रेस

   ए.ओ. ह्यूम
9. ii)
10. ग्रामीण
11. जनरल डायर, धार्मिक, खिलाफ़त
12. ii)
13. 1942, बंबई, भारत छोड़ो
14. नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने आज़ाद हिंद फ़ौज बना कर सैनिक अभियान द्वारा देश को स्वतंत्र कराने का प्रयास किया।
15. सांप्रदायिक घटनाओं के कारण अनगिनत लोगों की जानें गईं। अतः नेताओं ने ऐसी वारदातों को रोकने के लिए देश के बँटवारे की बात मान ली अतएव समय से पूर्व खंडित राष्ट्र की स्वतंत्रता की घोषणा की गयी।
16. क) (iv)

   ख) (i)

   ग) (v)

   घ) (ii)

   ङ) (iii)

अभ्यास

1.	समाप्ति,	दक्षिणी	2.	अपमानित	नगरीय
	क्रोधी	अभिव्यक्ति		इच्छित	अंकुरित
	उपलब्धि	समुद्री		प्रांतीय	संग्रहणीय

3.

गलत	गलत	गलत
गलत	गलत	सही
गलत	सही	गलत
गलत	सही	गलत
सही	गलत	गलत

4.

विश्वास+ईय	पश्चिम+ई
स्थायी+त्व	समाजवाद+ई
एशिया+ई	गति+शील
शुरू+आत	संतुष्ट+इ
फल+स्वरूप	आयोजन+इत
समर्थ+इत	अशांत+इ
पीड़ा+इत	संबंध+इत